(3.) (1)

Lecture Series No. 60.

Online Class
Date-01/7/2020.
Time-10:00-10:50 A.M

Topic,

(1) Mind-body Relation,

Dr. Sarita Kumari
Depart. of Philosophy.
B.A part-I
Paper-II (H.)
A.N.D. College Shahpur
Patory, Samastipur.

Ans:- द्रव्य विचार की समस्या अब देकार्त ने मन और शरीर के सम्बन्ध मे बतलाया है। दार्शनिकों की प्रमुख समस्या रही है। इस विचार की प्रमुखता जितनी अधिक आधुनिक दर्शन में पाते हैं, उतना अन्यत्र नहीं। विशेषकर ~~बुद्धिवादि~~ बुद्धिवादी विचारकों की तो यह विचित्रता रही है।

कि सबों ने द्रव्यों की एक परिभाषा को स्वीकार किया है किन्तु उनके निष्कर्ष भिन्न-भिन्न रहे हैं।

यहां हमें इन्हीं के

P.T.O

Scanned with CamScanner

द्रव्य सम्बन्धी विचारों का विवेचन करना है।

आधुनिक बुद्धिवाद के प्रवर्तक Descarts ने द्रव्य की परिभाषा देते हुए कहा है :-

'A substance is that which exist by itself and the existence does not need the existence of anything else.'

इससे स्पष्ट है कि जिसकी अपनी स्वतन्त्र सत्ता हो तथा अपनी सत्ता के लिए वह किसी अन्य वस्तु पर निर्भर न रहता है।

इस अर्थ में सांसारिक वस्तुओं को वास्तव में द्रव्य नहीं माना जा सकता क्योंकि वे एक दूसरे पर किसी न किसी रूप में आश्रित है। इस प्रकार

P.T.O.

Scanned with CamScanner

ईश्वर को एक मात्र द्रव्य माना जा सकता है, क्योंकि ईश्वर ही एक सत्ता है, जिसका कोई कारण नहीं हो सकता।

वह सभी वस्तुओं का आधार है। (1) Descarts ने ईश्वर को Self caused या Causesui कहा है। (जब कभी भी) परन्तु उन्होंने साथ ही साथ मन और शरीर को भी ~~निरपेक्ष~~ गौण अर्थ में दो स्वतंत्र द्रव्य माना है, इसके अनुसार आत्मिक तथा भौतिक (तथा) द्रव्य परम नहीं क्योंकि दोनों को ईश्वर पर निर्भर रहना पड़ता है।

इसलिए Descartes ने (उन्होंने) इन्हें सापेक्ष द्रव्य (relative Substance) कहा है।

इस प्रकार Descartes ने ईश्वर को प्रमुख एवं मन और शरीर को गौण द्रव्य मानकर अपने दर्शन में द्वैत की स्थापना कर दी (etc.)

END.